आरती साहिब सतगुरू जी की

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

1 जो ध्यावे सुख पावे, दुख मिटे तन का साहिबा –
वचन सुनत तम नासे – २, सब संशय मन का साहिबा –
2 मात पिता तुम मेरे, शरण पड़ी तुमरे साहिबा –
तुम बिन और ना दूजा – २, आस करूं मैं जिसकी साहिबा –
3 गुरू चरणामृत निर्मल, सब दोषक हारी साहिबा –
सब्द सुनत भ्रम नासे – २, सब बंधन टारे साहिबा –
4 तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे साहिबा –
सतगुरू देव परम पद – २, मौक्ष गति लीजे साहिबा –
5 काम क्रौध मद्य लौभ, तृष्णा अति भारी साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सार सब्द को देकर, संत सब संहारें साहिबा –
6 ध्यानी योगी ज्ञानी, सब हरि गुण गावें साहिबा –
सब का सार बता कर – २, संत मार्ग लावें साहिबा –
7 मन माया निज घेरा, जीव बहे सारे साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सुरति जहाज चढ़ा कर, संत पल में तारें साहिबा –
8 संत बिन दान ना होवे, साहिब ब्ख़ान करें साहिबा –
संत बिन ज्ञान ना होवे, संत बिन मौक्ष ना होवे, यत्न बहुत कीने साहिबा –
9 दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
विषय विकार मिटाओ – २, तुम दर्शक मेरे साहिबा –
10 सुरत कमल के दाता, तुम रक्षक मेरे साहिबा –
मौक्ष पद दिलाओ – २ , तुम कर्ता मेरे साहिबा –

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – २, करूं हर पल सेवा

—0—

भजन साधकों के

सत्तगुरू सत्तनाम

सतगुरू जी के श्री चरणों में साधकों के श्रद्धा सुमन

सत्तपुरूष एक वृक्ष हैं, निरंझन उन के डाल।
तीन देव शाखें भई, पात्त फूल संसार।।

विषय सूचि गल्त है

ठीक विषय सूचि फाईल नः 2 के अंतिम पेजों पर देखें

ईति श्री

अमृत सार

हे जगत कीयारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । **ये सत सुरति भरे भजन सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखे गये और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किये गये हैं।** मूलतः यह भजन संग्रह किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म के ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित हैं । आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में उस ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगत में संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

—0—

संवेदना

प्यारे जगत वासी पाठको, इस शब्दकौष को कलमबद्ध करने के पीछे अभिप्रायः यह है कि सभी मानव मोक्ष पाऐं, माया से मुक्त होकर मूल में जा समाऐं। वर्तमान के पूर्ण सतगुरू 'श्री वे नाम परमहंस जी' की शरणी जाने पर ही हम मानव त्रिलोकी माया भक्तियों के भ्रम का एहसास कर पाऐं। जीवन में अधिकांश मनुष्यों ने गुरू धारण किये हैं, मानव समाज में जिन्होंने गुरू धारे और जिन्होंने गुरू नहीं धारे वे भी सर्गुण या निर्गुण किसी ना किसी ईष्ट की पुजा–भक्ति–वंदनाऐं तो करते ही आ रहे हैं।

मानव अधिकांशता कर्मयोगी, ज्ञानी, ध्यानी, साधक, भक्त व पूजा पाठी होता हुआ भी काम–क्रौध, विषय–वासना से मुक्त नहीं हो पा रहा। जीवन में स्थिरता, शांति, ठहराव आये, इस सब के विपरीत जिस किसी ने भी गुरू धारे या भक्ति की, वह साधारण मनुष्य से भी ज्यादा असंयमी, अहमी, स्वार्थी व द्वैषी होता जा रहा है। ऐसा इसलिए है कि मानव, जगत में माईक लगा कर ज़ोर शौर से अज़ानें देना, भजन गाना, जगराते व झांकियों की प्रथा (दिखावे की भक्ति) व ऐसी कंई अन्य धारणाओं में ऊलझा हुआ है। जो चन्द मनुष्य ध्यान लगाते भी हैं वे भी सर्वश्रेष्ठ होने के अहम से युक्त हैं, अर्थात जगत की भौतिक–भक्तियां तो भक्ति है ही नहीं बल्कि केवल दिखावा, मन बहलाने का संसाधन भर ही है। शारीरिक अंगों से परिश्रम (योगासन), मुख से बोलना (जपना), मन से ध्याना, शरीर, मुख व मन तीनों ही माया, देवी–देव तथा निराकार (ऊँ, खुदा, अल्लाह, ईश्वर, रब, वाहे–गुरू, भगवान तथा निरंकार सबै) सभी माया ही है, माया से माया की भक्ति करने से माया ही से मुक्ति कैसे संभव है, इन भक्तियों से तो भौतिक जगत माया अर्थात काम, क्रौध, लोभ व तृष्णा की वृद्धि होती है।

तो फिर भक्ति कैसी और किसकी की जानी चाहिए ? मुख व मन से भक्ति माया जाल उलझाव है। भक्ति तो काया भीतर चेतन सत्ता अर्थात आत्मां द्वारा परम–आत्मां साहिब सतपुरूष जी की की जानी चाहिए। आत्मां तो सुरति है और साहिब सतपुरूष जी पूर्णतः मूल सुरति पुण्झ हैं। आत्मां की भाषा सुरति है, भाषा तथा शब्दों का पसार ही तो जगत मोहिनी माया है, अति शाब्दिक ज्ञानी तो अहम से युक्त होने के कारण भक्ति से कौसों दूर हो जाते है, कर्म–इंद्रियां व मन तो शरीर अर्थात माया है। सुरति क्या है, कैसे चेतन होती है और इससे भक्ति कैसे संभव हो सकती है ? वर्तमान युग में सहज सत्त मार्ग के साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये बिन सुरति ज्ञान संभव ही नहीं चाहे कोई कितना भी यत्न प्रयन्न क्युं ना कर ले।

हे प्यारी आत्मांओ, जग मानव साथियो, सारा जगत ही तो भ्रम है, पूर्ण सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आओ, निज हंस रूप को जानो, माया मुक्त हो कर हंसा बनो और अपने मूल (साहिब सतपुरूष जी) सतलोक को पा जाओ।

—0—

संदेश

हे साहिब जी की प्यारी हंस–आत्मांओ, सतगुरू सतनाम जी !

इस शब्दकोष में ये आलोकिक भाव–विचार जीव आत्मांओं को प्रेम–भाव व सत्त–सुरति संदेश देना कि माया मुक्त हो सब हंसा बनें, इसी एक मात्र भाव से कलमबद्ध किये गये हैं। ये सारे के सारे लेखनी–बद्ध–भाव व विचार साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' के अमृतमयी प्रवचनों तथा उनके सानिध्य से व गौष्ट्ठियों से ग्रहन कर संक्षिप्त रूप में शब्दों में पिरोये हैं। अधिकांशतः कलमबद्ध विचार तो सतपुरूष रूप पूर्ण सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के मुखारबिंद से प्रकट हुए विचारों में से हैं। लगभग तीस प्रतिशत विचार व भाव सतगुरू जी द्वारा सुरति से अंताकरण में संदेश व भावों के रूप में प्रकट किए गये, जिन्हें भी इस पुस्तक में पाठकों की जिज्ञासा शांत करने हेतु कलमबद्ध किया गया है।

सहज सत्तमार्ग के वर्तमान काल के पूर्ण सतगुरू 'श्री वे नाम परमहंस जी' की सुरति से भरपूर अमृतमयी वाणी श्रवन करने से ही जीव आत्मां माया जाल से मुक्त हो मोक्ष पथ पर अग्रसित होती है। सतगुरू जी की वाणी अनुसार ये शब्द ज्ञान ही तो जगत में माया रूपी भ्रम मानव के भीतर उपझा रहे हैं। शब्दों में पिरोया ज्ञान ही तो मानव के भौतिक व आध्यात्मिक विनाष के पतन का एकमात्र कारण है। 52 अक्षरों (सब्द) से ही संसार में त्रिलोकी महां काल विस्तार है, इन 52 अक्षरों से परे आलोकिक शब्द 'ऊँ' ही 'ईक औंकार' निराकार है। सब शब्दों व भाषा से परे सुरति ही तो हंसा (आत्मां–माया=हंसा) है व 'हंसा' मूल–साहिब–सतपुरूष जी ही सत्तलोक हैं।

बिन पूर्ण सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आए, मानव संसारी प्रवृति से सुरतिवान नहीं बन सकता ! बिन सुरति मोक्ष कहां ?

हे जगत वासी मानव साथियो आओ, सहज सत मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आओ ।

आओ सभी 'हंसा' मिल सुरति–लोक सतलोक चलें !

–0–

मूल सार

हे प्यारी जीवात्माओं (माया लिप्त हंसो),

हम सब प्रायः त्रिलोकि की भ्रमित कर देने वाली माया (सुख साधन) ईकट्ठी करने व भौगने में ही अनमोल जीवन काल व्यतीत कर देते हैं। हमने मानव जन्म क्या माया में रमने व समय व्यतीत करके मर जाने के लिए पाया है ? अथ्वा क्या जग में चक्तिसक, इण्जिनियर, वैज्ञानिक, नेता, व्योपारी बनने और सुख साधन कमाने व भौगने के उपरान्त मरने के लिए ये जीवन पाया है ? क्या केवल नाम ख़्याति जग में पाना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य है ?

हे मूड़मति मानवो ! एक साधारण से साधारण मानव भी जग में जानता है कि ये जग चलोचली का मेला है, अथ्वा मानव–शरीर इस धरा पर खाली हाथ, नग्न अवस्था में ही पैदा होता है व यहां जो भी निज कमाई व सारी चेष्टठाओं से ईक्कट्ठी की गई धन–संपदा, भौतिक संसाधनों और रिश्ते नातों को यहीं पे तज कर खाली हाथ ही लौटना है। हमारे पूर्वजों ने भी यही किया, हमारे जीते जी यही हुआ, हम भी यही तो कर रहे हैं और हमारे चले जाने के उपरांत भी यही क्रम निरंतर चलता रहेगा। जगत में चेतना धारी अर्थात आत्म युक्त जीव काया ही निरंतर भौतिक जगत क्रमः (आवागमण, सुख दुख) का अंग बनी रहती है व इसे चलाऐमान रखती है। बिना चेतनता (आत्म सुरति) धरा पर सब अनुकूलता युक्त वातावरण व संसाधन होने पर भी काया कुछ भी भौगने व क्रिया करने की सामर्थता नहीं रखती।

भाई मेरे, ज़रा गौर तो करें ! सारी की सारी त्रिलोकि, सारे के सारे ईष्ट और आराध्य मिल कर भी काया को क्रियाशील नहीं कर सकते, चाहे कितने भी यत्न प्रयत्न व संसाधनों का प्रयोग क्यों ना कर लें। अर्थात ये चेतना (आत्मां) ही जगत में सर्वश्रेष्ठ व सर्वोपरि है। इस आत्म पर त्रिलोकि सृजनहार निरंकार का वश नहीं चलता, तभी तो ये त्रिलोकि का भ्रमित कर देने वाला सम्मोहन से युक्त मोहिणी माया का पसार (21 लोक विस्तार, अण्ड मण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड, सात द्वीप नौ खण्ड, 33 कौटि देवी देव, 84 लाख योनियां, बाहरमुखि भौतिक जगत विस्तार के संग–संग ये सारा विस्तार वैसा ही मानव काया पिण्ड के भीतर भी रच डाला) रच डाला। कहने का अभिप्रायः यह है कि मानव बाहरमुखि भौतिक जगत माया चकाचौंध में तो उलझा ही है, इसके संग–संग मानव काया के भीतर भी भौतिकता जैसा त्रिलोक ही रच दिया गया है अर्थात मानव बाहर से तो भ्रमित है ही परन्तु भीतर से भी भ्रमित हो गया है।

बिन सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस की शरणी आये जीव मोक्ष मार्ग पे अग्रसित हो ही नहीं सकता। जहां निरंकार भक्ति एक ओर मुख व मन से ध्यान द्वारा की जाती है वहीं दूसरी ओर सहज सतमार्ग भक्ति सतगुरू परमहँस कृपा से मुख, मन व निज काया से परे 'सुरति' द्वारा की जाती है। जहां निरंकार भक्ति के गुरू पहले से ही धर्म ग्रंथों में प्रचलित पंच शब्दों और ईष्टों के नामों को ही दीक्षा में प्रदान करते हैं, वहीं सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस स्वयं अपने आप में 'पूर्ण साहिब सतपुरूष जी' रूप ही होते हैं तथा वे तो अपने शिष्यों को 'साहिब सतपुरूष जी' से प्रदत 'सब्द विदेह' ही सुरति द्वारा दीक्षा में प्रदान करते हैं। यह 'सब्द विदेह बोल भाषा से परे होता है और इसका कहीं भी किसी भी ग्रंथ में वर्णन तक नहीं मिलता। इस 'सार सब्द' विदेह दात में स्वंय 'साहिब सतपुरूष जी' का वास होता है। 'साहिब सतपुरूष जी' की सत्ता निरंकार दायरे से कहीं उच्चतर पूर्ण सत्ता है। हंसा (आत्मां–माया=हंसा) 'साहिब सतपुरूष जी' का ही निज सुरति अंश है, वह तो अज्ञानता वश निरंकार की मोहिनी माया में उलझा हुआ निज रूप को ही भुलाये बैठा है। जहां निरंकार भगवान अपने भक्तों को उनके आराध्यों, ईष्टों के रूप में स्वंय दर्शन दे कर कृतार्थ करते हैं, वहीं सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस अपने आप में 'साहिब सतपुरूष जी' ही होते हैं, तभी तो सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँसों को 'साहिब जी' कह के भी संबोधित किया जाता है।

चाहे जगत में निज को भूली जीवात्मायें माया में लिप्त होने के कारण पूर्ण मोक्ष की ओर अग्रसित नहीं हो पाती परन्तु जगत में ईक्का–दुक्का बिरले बड़भागी जन सतगुरू परमहँस जी की शरणी आकर सदा से इस मार्ग की ओर अग्रसित होते ही रहे हैं।

हे माया में भ्रमित हंसो ! माया मोह तजो, और वर्तमान के संपूर्ण संत शिरोमणि साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' की शरणी में आओ। सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' की शरणी आकर अपने मूल लक्ष्य मोक्ष को पाकर जीवन को सार्थक बनायें।

हे जीवात्मांओ, आप सभी से करबद्ध विनम्र निवेदन है कि :–

आओ सब मिल कर सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' की शरणी चलें और मोक्ष को पा जायें ।

साहिब प्यारे हंसो :– साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' की शरणी में ही मिलता है निजधाम, इस धरा पर एक मात्र सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' ही हैं सतपुरूष रूप निजधाम !

सतगुरू सतनाम

(सत्त साहिब जी)

—0—

भजन साधकों के

साधकों द्वारा सतगुरू जी के प्रति भजन रूपी श्रद्धा सुमन

(क) भजन 1

नाम जपन दा वेला ऐ – २ साहिबा हुन मेहर करो – २
असां तेरे नाल रैहना ऐ – २ सतगुरू जी हुन मेहर करो – २

1 निजधाम असां जाना ऐ – २ अमरलोक असां जाना ऐ – २
साढे हुन भाग खुल गये – २ सच्चे साहिब ने बुलाया ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

2 मेरा सतगुरू प्यारा ऐ – २ जिदा दरस वी न्यारा ऐ – २
हुन साहिब नूं असां पाना ऐ – २ सतलोक असां वी जाना ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

3 बिन सतगुरू राह ना मिले – २ निजधाम दा पता ना मिले – २
सारी हुन डौर सुट के – २ गुरू चरणा च लगना ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

4 छोड़ो जग की तृष्णा रे – २ सुरति निरति नूं ईक कर के – २
मानसरोवर नहाना ऐ – २ गुरू संग संग चलना ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

5 आत्म ज्योति नूं अग्गे रख के – २ सारे नेरे नूं हटाना ऐ – २
अष्टम चक्र पार कर के – २ सच्चे घर नूं जाना ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

6 सतनाम नल प्रीत पा लै – २ दुनियां नूं परां तक के – २
चौथे राम दा गुण गा के – २ सतगुरूां दा प्यार पा लै – २ साहिबा हुन मेहर –

7 अपने दिल नूं तूं साफ कर लै – २ जित्थे साहिब नूं बिठाना ऐ – २
मेरे साहिब ने आना ऐ – २ परमहंस नल आना ऐ – २ साहिबा हुन मेहर –

नाम जपन दा वेला ऐ – २ साहिबा हुन मेहर करो – २
असां तेरे नाल रैहना ऐ – २ सतगुरू जी हुन मेहर करो – २

–0–

भजन 2

साहिब नाम जप ले प्यारे – हो जायेगा पार रे – २
दो दिन की ये ज़िन्दगानी – झूठा ये संसार रे – २

1 साहिब शरण में आया कर – होगा बेड़ा पार रे – २
ये दुनियां जो दिखती हमको – मोह माया का जाल रे – २ साहिब नाम –

2 दौलत ने इस दुनियां में – सबको भरमाया रे – २
इससे जो तूं बचना चाहे – संत शरण में आया कर – २ साहिब नाम –

3 आकर तूं सत्संग सुने – प्रवचन अमृत में नहाया कर – २
दीक्षा पा कर ध्यान लगा कर – सतगुरू दर्शन पाया कर – २ साहिब नाम –

4 साहिब मिलेंगे ध्यान में तुझको – ध्यान तूं रोज़ लगाया कर – २
जीवन है अनमोल तेरा – व्यर्थ ना इसे गंवाया कर – २ साहिब नाम –

5 स्वांस स्वांस में सिमरन कर ले – समय ना व्यर्थ गंवाया कर – २
जीते जी तूं मोक्ष पा ले – साहिबन दर्शन पाया कर – २ साहिब नाम –

साहिब नाम जप ले प्यारे – हो जायेगा पार रे – २
दो दिन की ये ज़िन्दगानी – झूठा ये संसार रे – २

–0–

भजन 3

सतगुरूां दा प्यार तूं पा लै – वैला नंईयो हथ आवना – २
कंई तर गये कंईया ने तर जाना – सतगुरूां दा तूं नाम जप लै – २

1 रब रब रब करदी – दुनियां वाजां मारदी – २
खबर ना मिले – फिर भी सच्चे उस यार दी – २
प्रीत करन दा मौका हुन पा लै – वैला नंईयो हथ – सतगुरूां दा –

2 निरंकार प्रभु दी है – बड़ी ही महानता – २
सारा जगत बस – भ्रम यही पालता – २

ईक वारी सच्चे साहिब नूं तूं पा लै – वैला नंईयो हथ – सतगुरूां दा –

3 परमहंस जी दी – संगत विच आ कर – २

भेद नाम सब्द दा – तूं पार कर – २

निजधाम दी राह तूं पा लै – वैला नंईयो हथ – सतगुरूां दा –

सतगुरूां दा प्यार तूं पा लै – वैला नंईयो हथ आवना – २

कंई तर गये कंईया ने तर जाना – सतगुरूां दा तूं नाम जप लै – २

–0–

भजन 4

सतनाम सिमर सतनाम – सतनाम साहिब सतनाम

सतनाम सिमर कर तूं – जीवन सफल कर ले – २

1 ये जो बिखरी हुई माया है – जीवन ही की छाया है – २

इस माया से लिपट कर के – सब जगत भरमाया है – २ सतनाम सिमर –

2 हर जन पुकारे भगवान – पर हाथ ना आवे राम – २

उस राम के भेद में फिर – फंसा बुरी तरहं ईन्सान – २ सतनाम सिमर –

3 आये साहिब के द्वार वही – जिन पे हो वो ही मेहरबान – २

सच्चे संत से ज्ञान पा कर – हो जाये तेरा कल्याण – २ सतनाम सिमर –

4 निजधाम दा तूं वासी ऐ – तेरी कटे हुन चौरासी ऐ – २

साहिब नाल ईक मिक हो के – जन्म मरन तूं खलासी ऐ – २ सतनाम सिमर –

सतनाम सिमर सतनाम – सतनाम साहिब सतनाम

सतनाम सिमर कर तूं – जीवन सफल कर ले – २

–0–

भजन 5

भक्ति भक्ति करत सब जगत आज – २ इसको कोई ना जाने आज – २
भक्ति भक्ति जगत ब्खाना – २ भक्ति भेद ना कोई जाना
इसको कोई ना जाने आज – भक्ति भक्ति करत –

1 ना कोई गुरू ना शिष्य ये जाने – २
मुक्ति मार्ग कोई ना पहचाने – २
सब नर मुणि जन भटकत आज – भक्ति भक्ति करत –

2 सारा जग बस सोया पड़ा है – २
मोह माया में भटक रहा है – २
सुरत संजीवनी ना मिलती आज – भक्ति भक्ति करत –

3 गुरू गुरू गुरू रट सभी लगावें – २
पूर्ण संत कोई फिर भी ना पावे – २
बिन संत साहिब मिले ना राज़ – भक्ति भक्ति करत –

4 जिन खोजत तिन पायो राम है – २
चौथे राम का भेद ही नाम है – २
जो कोई गावे पावे राम – भक्ति भक्ति करत –

5 साहिब मिलत बस प्रीत विरह से – २
प्रीत की कोई रीत ना जाने – २
प्रीत का बीज बस बो लो आज – भक्ति भक्ति करत –

6 निजधाम जाना ही परम ध्येय है – २
सुरति निरति बस इतना करत है – २
साहिब...साहिब... साहिब जी आज – भक्ति भक्ति करत –

7 दो पाटन के बीच पिसत है – २
पार भयो कील संग जो लगत है – २
सब नर मुणि जन भटकत आज – भक्ति भक्ति करत –

भक्ति भक्ति करत सब जगत आज – २ इसको कोई ना जाने आज – २
भक्ति भक्ति जगत ब्खाना – २ भक्ति भेद ना कोई जाना
इसको कोई ना जाने आज – भक्ति भक्ति करत –

–0–

भजन 6

मोरा साहिब ही गाता जाये – २ सतगुरू सतगुरू नाम जपा कर
सब्द सुरति में समाये – मोरा साहिब ही गाता जाये – २

1 अब तक सतगुरू को ही ना पाया – यही है माया की छाया – २
बिन सतगुरू मोहे ठौर कोई ना – भेद यही ना पाया
परमहंस सतगुरू को पाकर – साहिबन में जा समाये – मोरा साहिब ही – २

2 मेरा नहीं तूं जग का है दाता – सब को पार लगाता – २
भटके हुओं को रस्ता दिखा कर – निज घर को ले जाता
स्वांस स्वांस में नाम जपा कर – सुरति में ही समाये – मोरा साहिब ही – २

3 पाग वडे जो सतगुरू पाये – दासा पन आ जाये – २
सदियों से इस सोये हुऐ जन को – तन्द्रा वृत्ति से जगाये
सार सब्द की अग्नि जला कर – कचरा भस्म कराये – मोरा साहिब ही – २

मोरा साहिब ही गाता जाये – २ सतगुरू सतगुरू नाम जपा कर
सब्द सुरति में समाये – मोरा साहिब ही गाता जाये – २

–0–

भजन 7

आओ सारे सत्संग करिये – आओ सारे सत्संग करिये
सतगुरूां दे द्वारे जाके – भव सागर नूं पार करिये – २

1 परमात्म भजन कर लै – २ वेला नंईयो हथ आवना – २
अपने अवगुणां नूं दूर कर लै – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

2 सार सब्द दा भेद पा के – २ साहिब दी इस फूंकनी दे नाल – २
अपने पापां दा तूं नाश कर लै – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

3 श्वांसा दी डौरी दे नाल – २ सुरति निरति ईक कर लै – २
इस तन नूं तूं सुन्न कर लै – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

4 चलो गुरूां दे द्वारे चलिये – २ सत्संग अभ्यास कर के – २
२१ लोकां दा दीदार करिये – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

5 चलो सतलोक सारे चलिये – २ सतगुरूां दा जहाज आया ऐ – २
भव सागर नूं पार करिये – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

6 मेरे साहिब जी दी महिमां दा – २ जग विच कोई सानी नी दिसदा – २
जड़ा सृष्टि नूं जगादां फिरदा – सतगुरूां दे द्वारे जाके –

आओ सारे सत्संग करिये – आओ सारे सत्संग करिये
सतगुरूां दे द्वारे जाके – भव सागर नूं पार करिये – २

–0–

भजन 8

बहुत जन्म गंवायो रे – कब आओगे मोरे साहिबा – २
कितनी देर लगायो रे – आओ भी अब मोरे साहिबा – २
तुझ संग प्रीत लगाई रे – मुझे बुला लो मेरे साहिबा – २

1 मैं नीवीं मेरा सतगुरू ऊँचा – २
इतना भी समझ नां पायो रे – २ – कब आओगे मोरे –

2 स्वांस स्वांस में नाम जपा कर – २
सतगुरू पार लगायो रे – २ – कब आओगे मोरे –

3 राम नाम यूंहि रट रट रट कर – २
व्यर्थ ही जन्म गंवायो रे – २ – कब आओगे मोरे –

4 ध्यान विधि से नाम जपा कर – २
सुरति में साहिबन पायो रे – २ – कब आओगे मोरे –

5 सुरति निरती ईक सम हो जब – २
साहिब में साधक समायो रे – २ – कब आओगे मोरे –

बहुत जन्म गंवायो रे – कब आओगे मोरे साहिबा – २
कितनी देर लगायो रे – आओ भी अब मोरे साहिबा – २
तुझ संग प्रीत लगाई रे – मुझे बुला लो मेरे साहिबा – २

–0–

भजन 9

ये हमारी खुशनसीबी – हमको मिले हैं साहिब जी – 2
कोई ख़्वाहिश नहीं अधूरी – हमको मिले हैं साहिब जी – 2

1 भक्ति का राज़ क्या है – ये ही ना पहले जाना था – 2
निज घर की राह क्या है – किसी ने ना पहचाना था – 2
हम दास बन गये हैं – गुरू के खास बन गये हैं
जब से मिले हैं साहिब जी – कोई ख़्वाहिश नहीं – ये हमारी खुशनसीबी ––

2 पहले भी जी रहे थे – इतना खुमार ना था – 2
खुद ही की शख़्सियत पर – हम्हें ऐतबार ना था – 2
हम दास बन गये हैं – गुरू के खास बन गये हैं
जब से मिले हैं साहिब जी – कोई ख़्वाहिश नहीं – ये हमारी खुशनसीबी ––

3 बदली है अपनी काया – ज्युं ही, सार सब्द है पाया – 2
इस नाम सब्द को ध्या कर – कचरा सभी जलाया – 2
आज़ाद हो गये हैं – भव पार हो गये हैं
जब से मिले हैं साहिब जी – कोई ख़्वाहिश नहीं – ये हमारी खुशनसीबी –––

ये हमारी खुशनसीबी – हमको मिले हैं साहिब जी – 2
कोई ख़्वाहिश नहीं अधूरी – हमको मिले हैं साहिब जी –

–0–

भजन 10

नया जन्म देने वाले सत्तगुरू – तन मन धन करूं तेरे अर्पण मैं – 2
तुझे अपना बनाके मेरे सत्तगुरू – सब सौंप दिया तेरे चरणों में – 2
दीदार करूं तेरा समर्पण में – 2

1 हर पल तेरा नाम ध्यायूं में – सुरति में रहूं तेरे चरणों में – 2
मानुष तन पाया है जब से – तुझे ढूंढू फिरूं मैं कण कण में – 2
तुझें डूंढा हर गली कूचे में – पर डूंढा ना अपनी सुरति में
नया जन्म देने वाले –––

2 मैनें इतने जन्म गंवाए हैं – कंई युगों युगों ओर सदियों से – 2
मैनें इतने पाप कमाए हैं – कंई योनियों में कंई जन्मों से – 2
पर ऐसा भेद कोई पा ना सके – छूटें इन बंधन कर्मों से
नया जन्म देने वाले –––

3 सुरति में हूं सत्तगुरू जब से तेरी – कोई चाह ना रही अब इस मन में – 2
सत्तगुरू तेरा जब से संग मिला – नाचूं फिरूं गांऊ इस सुरति में – 2
इस सार सब्द की ग़रिमा से – निजधाम जांऊ इस जीवन में
नया जन्म देने वाले –––

नया जन्म देने वाले सत्तगुरू – तन मन धन करूं तेरे अर्पण मैं – 2
तुझे अपना बना के मेरे सत्तगुरू – सब सौंप दिया तेरे चरणों में – 2
दीदार करूं तेरा समर्पण में – 2

–0–

भजन 11

मेरे साहिब मेरे प्यारे का सानी नहीं कोई जग में – 2
मेरे साहिब के वचनों का कोई सानी नहीं इस जग में – 2
मेरे साहिब मेरे सत्तगुरू का सानी नहीं कोई जग में

1 कहीं ऐसा ना हो जाए – ये जन्म ना व्यर्थ चला जाए – 2
निरंझन काल के हाथों – कोई रूसवा ना हो जाए – 2
तूं पूर्ण सत्तगुरू शरणी जा – तेरा जन्म सफ़ल हो जाए –मेरे साहिब–

2 कयामत आ जाने तक – कहीं इन्तज़ार ना करना – 2
जीते जी ही मर मिटने – का बस इकरार कर लेना – 2
महाप्रलय आने से पहले – सुरति का निजाम कर लेना –मेरे साहिब–

3 निरंझन काल के जग में – बुरा किसी को भी ना कहना – 2
यहां तक कि इस मन से भी – कोई शिकवा नहीं करना – 2
इसी मन को शांत कर के ही – भव सागर पार कर लेना –मेरे साहिब–

मेरे साहिब मेरे प्यारे का सानी नहीं कोई जग में
मेरे साहिब की बातों का कोई सानी नहीं इस जग में

–0–

भजन 12

सत्तगुरू निजधाम वाले, चाहूं मैं तेरी ख़ुदाई, तुझ संग प्रीत है लगाई साहिबा – 2

1 भक्ति भक्ति पुकारे ये दुनियां सारी – फ़िर भी ये भेद ना पाए कैसी लाचारी – 2
जब से निराला मेरा सत्तगुरू है आया – कितने यत्न से मैने इसको है पाया
जिसने मुझे आके बस जीना सिखाया –
सार सब्द पाके, सुरति में इसको ध्या के – 2, सत्तगुरू की प्रीत मैनें पाई – 2
सत्तगुरू मेरे दीन दयाला – चाहूं मैं अमृत प्याला, साहिब की प्रीत मैने पाई – सत्तगुरू–

2 सत्तगुरू भक्ति को पा के राज़ ये जाना – जीने का मक़सद क्या है इसको अब जाना – 2
कंई युगों से मैं चौरासी में आया – चक्रव्यूह क्या है ये कोई ना कह पाया
बीच भंवर में फंस के दें हम दुहाई –
आज्ञा चक्र में जाके, सत्तगुरू का संग पा के – 2, सत्तगुरू की दात मैने पाई 2– सत्तगुरू–

3 हंसा रूप सत्तगुरू जैसा जब से है पाया – मन का अब साथ छूटा सत्तगुरू बन आया – 2
जग के कल्याण हेतु सच को है ध्याया – सत्तगुरू वचनों पे चल के जग को जगाया
सत्तगुरू भक्ति का सच्चा रूप दिखाया –
कचरा सब भस्म करा के, झूठ भ्रम सब से छुड़ा के – 2 साहिब से शादी है रचाई – 2
सत्तगुरू मेरे दीन दयाला – चाहूं मैं अमृत प्याला, साहिब में सुरमि है रमाई – 2– सत्तगुरू–

सत्तगुरू निजधाम वाले , चाहूं मैं तेरी खुदाई, तुझ संग प्रीत है लगाई साहिबा – 2

–0–

भजन 13

मेरे प्यारे सत्तगुरू मेरी प्रीत अमर कर दो
बस प्रीत अमर कर दो यही रीत अमर कर दो

1 तूने दामन जो थामा है – हुआ धन्य ये जामा है – 2
बस प्रीत की मेहर जो हुई – अपना साथ पुराना है – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

2 मैं था गुनाहगारी – नैया थी बड़ी भारी – 2
मुझे सारथी बन कर के – भव पार उतारा है – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

3 मैने सब कुछ छोड़ा है – बस तुझ को ही ध्याया है – 2
मेरा सब कुछ अर्पण है – तेरे चरणों मे समर्पण है – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

4 ये अजीब विडम्बना है – सब जग भरमाया है – 2
झूठी माया के वस हो कर – निज घर को भुलाया है – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

5 ऊंचे कर्मों से दात जो मिली – इसका मोल कोई ना पाया है – 2
सार नाम की दात पाकर – अपनी मंज़िल को पाया है –मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

6 अपने साहिब को पाकर ये – आत्म रूप दर्शाया है – 2
सत्तगुरू की महिमा का – राज़ कोई कोई पाया है – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

7 हर जन को जगाने यहीं – संत बन सत्तगुरू आए हैं – 2
अब कर्म बस इतना करो – पूर्ण संत जी की शरण मे रहो – मेरे प्यारे सत्तगुरू –––

मेरे प्यारे सत्तगुरू – मेरी प्रीत अमर कर दो
बस प्रीत अमर कर दो – यही रीत अमर कर दा

–0–

भजन 14

निजधाम जाने वाले साधको बड़े प्रेम से साहिब नाम जपो
सतनाम जपो साहिब नाम जपो सतनाम जपो साहिब नाम जपो
निजधाम जाने वाले साधको गुरू महिमा का गुणगान करो
थोड़ा ध्यान करो गुरू सम्मान करो बस सुरति में ही सत्तगुरू ध्यान करो

1 निजधाम जाने वाले साधको मानसरोवर में तुम श्नान करो – 2
तुम श्नान करो गुरू का ध्यान करो – 2
अपने सत्तगुरू के आने का थोड़ी देर वहीं इन्तज़ार करो
सत्तगुरू ध्यान धरो बस तुम ध्यान धरो – 2 – निजधाम जाने वाले –––

2 मानसरोवर जाने वाले साधको आज्ञा चक्र में थोड़ा विश्राम करो – 2
थोड़ा ध्यान धरो सत्तगुरू ध्यान धरो – 2
त्रिकुटि आज्ञा चक्रों के भेद को पूरी श्रद्धा से तुम बस अमल करो
बस अमल करो बस तुम अमल करो – 2 – निजधाम जाने वाले ––

3 आज्ञा चक्र में जाने वाले साधको इंगला पिंगला को अपनी तुम सम करो – 2
बस सम करो बस तुम सम करो – 2
सुश्मिन द्वार अपने को सुरति निरति से, सहनशीलता से तुम पार करो
तुम पार करो गुरू के द्वार चलो – 2 – निजधाम जाने वाले –––

4 उल्टा जाप जपने वाले साधको पहले श्वांस श्वांस पर ध्यान धरो – 2
बस ध्यान धरो बस तुम ध्यान धरो – 2
अपना मन ओर चित तुम शांत करो अपनी सांसों पे तुम बस ध्यान धरो
तुम ध्यान धरो बस ध्यान धरो – 2 – निजधाम जाने वाले –––

5 अपनी सांसों के दृष्टा बने साधको सत्तगुरू सार सब्द का ध्यान करो – 2
तुम ध्यान धरो थोड़ा ध्यान धरो – 2
सच्चे सत्तगुरू से इस दात का सच्चे सौदे का तुम व्योपार करो
सच्ची प्रीत करो गुरू से प्रीत करो – 2 – निजधाम जाने वाले –––

निजधाम जाने वाले साधको बड़े प्रेम से साहिब नाम जपो
सतनाम कहो साहिब नाम जपो – 2
निजधाम जाने वाले साधको गुरू महिमा का गुणगान करो
थोड़ा ध्यान धरो गुरू सम्मान करो बस सुरति में ही सत्तगुरू ध्यान धरो

–0–

भजन 15

साहिब का स्मिरण किया करो – सुरति में ही रहा करो – 2
जो निजधाम के मालिक हैं – स्मिरण उन्हीं का किया करो – 2

1 दुर्लभ मानुष तन को तूने – बड़े भाग से पाया है – 2
विषयों में फंस कर ऐ बन्दे – अनमोल जन्म ये गंवाया है – 2
बुरी संगत ना किया करो – सत्संग में भी रहा करो – जो निजधाम के –––

2 हर प्राणी से प्यार करो तुम – सब में वही समाया है – 2
मिलकर रहना सब हैं अपने – एक ही परिवारा है – 2
भेदभाव ना किया करो – सुरत नाम रस पिया करो –– जो निजधाम के –––

3 पता नहीं ये कब रूक जाएं – चलते चलते श्वांसा – 2
इक पल में सब ख़त्म हो जाए – जग का सारा तमाशा – 2
सुबह शाम जप किया करो – साहिब की सुरति ही में रहो –– जो निजधाम के ––

साहिब का स्मिरण किया करो – सुरति में ही रहा करो
जो निजधाम के मालिक हैं – स्मिरण उन्हीं का किया करो

–0–

भजन 16

मैने साहिब की सुरति संग हंसा बन अमरलौक है जाना – 2
इस काल के जग को छोड़ कर अब निजघर को है जाना – 2

1 जब से हूं मैं इस जग में आया – कभी ना साहिब को ध्याया – 2
आने से पहले के वचन को मैनें – कभी ना सुरति में लाया – 2
मोह माया के जाल में फंस कर – 2 अपना वचन भुलाया –– मैने साहिब की ––

2 काल के जग की चकाचौधं में – खुद को रमा हुआ पाया – 2
अपने आप ही को सब कुछ जाना – अहम भी सर चढ़ आया – 2
जैसे ही चकनाचूर हुआ ये – 2 सब कुछ समझ में आया –– मैने साहिब की ––

3 अपने शुभ कर्मों की ख़ातिर – सत्संग में हूं आया – 2
पूर्ण संत से मिल कर खुद को – बड़ भागी है पाया – 2
सत्तगुरू वचनों को अमल में ला के – जीवन सफल बनाया–– मैने साहिब की ––

4 सत्तगुरू महिमा को जान के मैने – अपने आप को पाया – 2
सार सब्द की दौलत पा के – सुरति में साहिब को पाया – 2
परमहंस संग हंसा बन के – 2 निजघर को है जाना –– मैने साहिब की ––

मैने साहिब की सुरति संग हंसा बन अमरलौक है जाना – 2
इस काल के जग को छोड़ कर अब निजघर को है जाना – 2

–0–

भजन 17

साहिब नाम के हीरे मोती – साहिब बिखेरें गली गली – 2
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा – साहिब साहिब की लहर चली – 2

1 जब से है मैने साहिब को पाया – अमरलौक सुरमि चली – 2
कल तक थी जो काल के वश में – आज उस मन को छोड़ चली – 2
सार नाम की दात को पा के – 2 हंसा बन निज घर को चली
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा –––

2 सत्तगुरू प्यारे जग को जगा कर – जीने की कला वो समझाते – 2
नाम सब्द की दीक्षा देकर – कचरा सबा हर जाने – 2
वहम ओर भ्रम का भेद बता कर – 2 सच्ची राह वो ले चले
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा –––

3 निरंकार के लोक में आकर – हर जन है भरमाया हुआ – 2
सत्त की भक्ति को ना पाकर – चौरासी में समाया हुआ – 2
काल भक्ति से मांग मांग कर – 2 फिर कयामत ही मिली
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा –––

4 सुन ऐ मैरे काल के बन्दे – खुद में क्यूं हो खोए हुए – 2
तुम आत्म नहीं हंसा हां – उस अमर लौक से आए हुए – 2
अकड़ छोड़ माया को तज के – 2 अपने साहिब से जा मिलो – 3
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा –––

साहिब नाम के हीरे मोती – साहिब बिखेरें गली गली – 2
ले लो रे कोई साहिब का प्यारा – साहिब साहिब की लहर चली –2

–0–

भजन 18

मेरे साहिब पधारे हैं – सत्तगुरू पधारे हैं – 2
मैं शीष निवांऊ जिन्हें – सारे जग से वो न्यारे हैं – 2

1 मैने साहिब को सुरति से – निरति में बसाया है – 2
नैनन से जो नीर बहे – सत्तगुरू चरणों को धुलाया है – 2
विरह की अग्नि से – मैने प्रीत को जगाया है – 2 –– मैं शीष निवांऊ ––

2 सत्तगुरू जी के चरणों का – अमृत मैने पाया है – 2
चरणामृत पा कर के – हर कष्ट मिटाया है – 2
श्रद्धा सुमन अर्पित हैं – हर भरम मिटाया है – 2 –– मैं शीष निवांऊ –––

3 वादा किया था हमने – अपना वचन निभाएंगे – 2
हर पल तुम्हें ध्याऐंगे – औरों को भी जगाएंगे – 2
पर माया वश पड़कर – अपना अतीत भी खोया है – 2 –– मैं शीष निवांऊ –––

4 सत्तगुरू जी की शरणी में – अपने आप को पाया है – 2
इस जग को जाना है – खुद को भी पहचाना है – 2
हंसा रूप में आए थे – हंसा रूप ही जाना है – 2 –– मैं शीष निवांऊ –––

5 अष्ट्म चक्र का भेद जान कर – निजधाम को जाना है – 2
उल्टा जाप कर समाधि में – पूर्ण मोक्ष को पाना है – 2
अपने कचरे को जला कर के – प्यारे साहिब को पाना है – 2 –मैं शीष निवांऊ–

मेरे साहिब पधारे हैं – सत्तगुरू पधारे हैं – 2
मैं शीष निवांऊ जिने – सारे जग से वो न्यारे हैं – 2

–0–

भजन 19

असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे सत्तगुरू तेरे – 2 असी तेरे तेरे तेरे साहिबा तेरे होए आं – 2

सोना ऐ दरबार मेरे साहिब दा – बड़ा प्यारा द्वार मेरे साहिब दा – नि बंदेया ––
दाता दा दरबार बड़ा निराला ऐ – सत्तगुरू दा दरबार बड़ा ही न्यारा ऐ – नि बंदेया –

1 जित्थे जोत साहिब जी दी जगदी – नित जगमग जगमग करदी – 2
आते हैं जो हो के ख़ाली – वो जांए यहां से ना ख़ाली – 2
तूं कर के समर्पण पूरन सत्तगुरू शरणी दे विच आ – नि बंदेया सोना ऐ ––

2 जो सार सब्द नहीं पाते – तीन लोकों तक रह जाते – 2
जो कर्म काण्ड में हैं धसते – मुक्ति को कभी नहीं पाते – 2
स्वर्गों नरकों तक ही रह कर वे काल जाल फ़िर पड़ते – नि बंदेया सोना ऐ ––

3 मैं मैं तूं छोड़ ऐ बंदेया – ये काल जाल निस्तारा – 2
कयामत तक नहीं छूटेगा – जे फ़ड़ेया ना सत्तगुरू द्वारा – 2
आठ अरब ओर चौंसठ कोटी वर्ष तक कैद में तुझको है पड़ना रे– नि बंदेया सोना ऐ

4 जो लें सत्तगुरू का सहारा – होता है उनका ही पारा – 2
सुरति सत्तगुरू की न्यारी – लगे साधकों को ये प्यारी – 2
आत्म हंसा बन कर के निकले सुरति साहिब संग प्यारी – नि बंदेया सोना ऐ –

5 मेरे साहिब की दात निराली – करे साधकों की रख़वाली – 2
दासा पन बन ये सुरति – सोयों को है ये जगाती – 2
सांसों को पलट जब सुन्न बना कर साहिब में जा समाती – नि बंदेया सोना ऐ –

6 हर पल साहिब सुरति में रमकर – सांसों संग सब्द बिठा ले – 2
निज ध्यान विधि सूं नित दिन – साहिब में जा तूं समा रे
जीवित मर कर भवजल तर कर –तूं संत साहिब बन आ रे– नि बंदेया सोना ऐ––

7 जब श्वांसा तेरे हैं जाते – सतगुरू की सवारी पे हैं जाते – 2
तेरे जाने पे सब खुश हों जो – ऐसी मरनी तूं जा रे
कोई रो रो के तुझे करे ना विदा रे – ऐसी मरनी तूं पा रे – नि बंदेया सोना ऐ ––

8 सतगुरू जी दे प्यारे द्वारे – आजा तूं खांदा हुलारे – 2
आशा तृष्णा और मंग बिन – तूं संत चरण पड़ जा रे – 2
सतगुरू वचनों पर चलकर तूं सतगुरू का ही हो जा रे – नि बंदेया सोना ऐ ––

सोना ऐ दरबार मेरे साहिब दा – बड़ा प्यारा द्वार मेरे साहिब दा – नि बंदेया ––
दाता दा दरबार बड़ा निराला ऐ – सत्तगुरू दा दरबार बड़ा ही न्यारा ऐ– नि बंदेया

असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे सत्तगुरू तेरे –2 असी तेरे तेरे तेरे साहिबा तेरे होए आं – 2

–0–

भजन 20

सतगुरू सुरति में रमते रहो – सतगुरू चरणों में ही झुकते चलो
सारी दुविधांए मिट जाएंगी –जीवन को सफल बनाएंगी ––अपने लिए –2

1 बहुत दुख हैं झेले इस आत्म नें – मन माया के महांजाल में – 2
कब से हूं बिछड़ी हुई निज घर से – दर दर भटकती इस भ्रम जाल में
महांकाल तुम्हें जब डराने लगे – ये बंधन कर्म उलझाने लगें
फिर भी तुम सुरति में रमते रहो – सतगुरू स्मिरण में ही रहते चलो
अपने लिए – 2 सतगुरू सुरति में –––

2 ये आत्म है अंश उन साहिब का – जिनका निजघर सतलौक है – 2
निरंझन निराकार की कैद में – इक्कीस लौक जिनका विस्तारा है
करोड़ों युग बीते हैं तड़पते हुए – अपने प्रीतम की इक आस में
कर्म बस तुम इतना करते चलो – सतगुरू शरणी में ही झुकते चलो
अपने लिए – 2 सतगुरू सुरति में –––

3 कयामत हैं बीतीं जग आए हुए – अभी जा के सतगुरू की मेहर हुई – 2
भला हो उस आत्म का जिसने मुझे – साहिब सतगुरू से मिलवा दिया
बड़े भाग से सार दात मिली – पूर्ण गुरू रूप में साहिब मिले
बस तुम इतना ही करते चलो – आशा तृष्णा तज सुरति में रहो
अपने लिए – 2 सतगुरू सुरति में –––

4 चौरासी का चक्र छुट गाएगा – मौक्ष पूर्ण मिल जाएगा – 2
आत्म का दुख मिट जाएगा – हंसा बन साहिब में समाएगा
जीवन का लक्ष्य अब पूरा हुआ – औरों को भी ये बताते चलो
स्मिरण ही स्मिरण में रहते रहो – हर पल सुरति में ही बसते चलो
अपने लिए – 2 सतगुरू सुरति में ––

सतगुरू सुरति में रमते रहो – सतगुरू चरणों में ही झुकते ही चलो
सारी दुविधांए मिट जाएंगी – जीवन को सफल बनाएंगी ––अपने लिए –

–0–

भजन 21

सतगुरू सतनाम बिना मंज़िल को ना पाए होते – 2
हम निराकार के इस जग में ही उलझे होते – 2

1 कितने युग बीत गए फिर भी मझदार में हैं – 2
हम तो क्या सारा ही जग माया के इस जाल में है
काल के जाल में मर मर के सभी बेहाल तो हैं – सतगुरू सतनाम –

2 साहिब हंसा ही थे हम आत्म बन बिछड़े हैं – 2
अपने निज घर को भी माया के लिए भूले हैं
बृहंगा मत जान के सतगुरू संग घर जाना है – सतगुरू सतनाम –

3 सतगुरू मेहर अब जो हुई प्रेम को अब जाना है – 2
सार सब्द अब बस पा के गुरू में समाना है
बरसों की नींद से अब खुद को बस जगाना है – सतगुरू सतनाम –

4 मानव जन्म कर्मों से मैने पाया है – 2
सतगुरू सुरति को पाकर सफल बनाया है
खुद भी जागे हैं तो औरों को भी जगाना है – सतगुरू सतनाम –

5 काल भ्रम जाल में कचरों से ही लदे रहते हैं – 2
तीन पाँच पच्चीस के पिंझरे में फंसे रहते हैं
सार सब्द दात से इस कचरे को जलाना है – सतगुरू सतनाम –

6 सत भक्ति के भेद को न कोई जाना है – 2
आठ अरब चौंसठ करोड़ के फेर में बस आना है
अब भी अकड़ छोड़ दे ऐ मानव घर लौट चलो – सतगुरू सतनाम –

सतगुरू सतनाम बिना मंज़िल को ना पाए होते – 2
हम निराकार के इस जग में ही उलझे होते – 2

–0–

भजन 22

पूर्ण सतगुरू निजधाम से आए–सारे जगत को मोह माया से छुड़ाऐ – 2
सतगुरू हैं आए साहिब मौरे आऐ ।

1 मानव तन ना मिला आशा तृष्णा के लिए – 2
सारा जग है सोया गहरी निंद्रा में रमे
कंई जन्म हैं खोए व्यर्थ ही गंवाऐ
कयामते हैं बीती जब से जग में आऐ –सतगुरू हैं आए–

2 खुशनसीबी मेरी सतगुरू हैं मिले – 2
सार दात जो मिली मैने जीवन है जाना
काल के जाल को ना मैने था जाना
सतलौक के भेद ना किसी ने जाना –सतगुरू हैं आए–

3 साहिब सतनाम हैं जीवन जीने की कला
माया परतें हैं चड़ी कोई विकल्प ना मिला
जब से सतगुरू ध्याये सब कुछ हैं पाए
कचरे को जलाया सतगुरू को पाया –सतगुरू हैं आए–

पूर्ण सतगुरू निजधाम से आए–सारे जगत को मोह माया से छुड़ाए– 2
सतगुरू हैं आए साहिब मारे आ ऐ ।

–0–

भजन 23

आत्म को छुड़ा लो काल से तुम – 2 ये हंसा है बेग़मपुर की
ये सदियों से बिछड़ी है निजघर से इसे साहिब की शरणी में ले आओ

1 युगों युगों से बिछड़ी है ये – 2 बिलख बिलख कर तड़पी है ये – 2
विरह की अग्नि में जल कर इसे पाना है सतगुरू दीदार –ये सदियों से–

2 काल ने इसे माया जाल में झकड़ा – 2 इंद्रियों ने चौरासी में घेरा – 2
निजघर को है भूली जन्मों से इसे जाना है त्रिलौकी से पार –ये सदियों से–

3 सतगुरू जग में डूंढे फिरत हैं – 2 हौके दे हुलारे देके – 2
सभी हंसों को डूंढें निस दिन हर पल – 2 देते फिरें दात वो सार सब्द–ये सदियों से–

4 सतगुरू मिलते हैं शुभकर्मों से –2 तृष्णा तज गुरू शरणी में आ के – 2
समर्पण कर दो तुम सतगुरू को – 2 तुझे ले जाऐं सतलौक के पार –ये सदियों से–

5 निष्ठा से सतगुरू शरणी में आओ – 2 श्रद्धा से ध्यान विधि अपनाओ – 2
कचरों को जला दो स्मिरण से – 2 सार सब्द की महिमां है अपरम्पार –ये सदियों से–

6 सतगुरू तुम्हें निजधाम ले जावें – 2 आवागमण से भी वो छुड़ावे – 2
समर्पण कर दो बस सब तज कर – 2 सतगुरू को ही कर्ता रहने दो –ये सदियों से–

आत्म को छुड़ा लो काल से तुम – 2 ये हंसा है बेग़मपुर की
ये सदियों से बिछड़ी है निजघर से इसे साहिब की शरणी में ले आओ

–0–

भजन 24

साहिबा मोहे निजधाम ले जाओ – 2
कंई युग बीते सदियां बीती – 2
पर मैनें सार दात ना पाई –– साहिबा मोहे –

1 घौर अंधकार है, सब जग अंधा – 2
काल के वश पड़ा, हर इक बंधा
जग की भक्ति कोई काम ना आए –– साहिबा मोहे –

2 कौटि जन्म से, हूं निजधाम से आया – 2
हंसा था पहले अब, मन ने भरमाया
कोई भी यत्न कछु काम ना आए –– साहिबा मोहे –

3 एक योनि, फिर दूसरी योनि – 2
दूसरी से फिर, अनेकों योनि
काल जाल चक्र मिट ना पाए –– साहिबा मोहे –

4 काल निरंझन, है रखवाला – 2
फिर कैसे खुले ये, मौक्ष का ताला
सतगुरू पूर्ण खोल ये पांए –– साहिबा मोहे –

5 सब्द से प्रकटे, ये जग सारा – 2
सार सब्द से है, सब निस्तारा
सार सब्द ही मौक्ष दिलायो –– साहिबा मोहे –

6 साहिबा साहिबा, सुरति में ध्याऊं – 2
सतगुरू चरण रज, मस्तक लगाऊं
सार नाम सुरति में रमाऊं –– साहिबा मोहे –

साहिबा मोहे निजधाम ले जाओ – 2
कंई युग बीते सदियां बीती – 2
पर मैनें सार दात ना पाई –– साहिबा मोहे –

–0–

भजन 25

सार नाम को जानो – 2 सार सुरति को पहचानो
सतगुरू को तुम ध्या लो
निजधाम को जानो – 2 माया बंधन से बचालो
अपने आप को जानो.......... मानव रे मानव रे
तूं तो जब से है आया, भ्रम जाल ही फस पाया,
निजधाम से है आया......... सार नाम को जानो ––

1 जब से हैं निजघर से हम आए – 2
काल जाल की कैद हैं पाए – 2
कोई ठौर ना मिला.......... मानव रे मानव रे
कोई ठौर ना मिला, कोई राह ना मिली
निजधाम ना मिला.......... सार नाम को जानो ––

2 माया जिसे कहते हैं, भरमों की खेती है – 2
जग की भक्ति उसका चैन हर लेती है – 2
काल गति तूं ना जाने .... मानव रे मानव रे
काल गति तूं ना जाने , अपने आप को ना जाने
यही भेद ना तूं जाने......सार नाम को जानो ––

3 माया को तज गुरू शरणी तूं आ जा – 2
अहम को तज आत्म रूप को पा जा – 2
सतगुरू महिमां तूं ना जाने ...... मानव रे मानव रे
सतगुरू कृपा तूं ना जाने, अमर सुरति ना पहचाने
सार दात ना पहचाने.......... सार नाम को जानो ––

सार नाम को जानो – 2 सार सुरति को पहचानो
सतगुरू को तुम ध्या लो
निजधाम को जानो – 2 माया बंधन से बचालो
अपने आप को जानो.......... प्राणी रे प्राणी रे
तूं तो जब से है आया, भ्रम जाल ही फस पाया,
निजधाम से तूं आया.......... सार नाम को जानो –

–0–

भजन 26

हे सतगुरू तोहे प्रणाम – २ तेरे चरणों में है निजधाम – २ हे सतगुरू –

1 चौरासी में अटके पड़े हैं – २ जब से हैं सृष्टि् में आये – २
काल जाल की कैद में पड़ कर – २ मोक्ष कभी ना पाये
मोह माया की नींद में रम कर – २ पाये ना सच्चा ज्ञान – हे सतगुरू –

2 कर्मों का लेखा कोई ना जाने – २ कहां है हमको जाना – २
काल के इस भ्रम जाल में फंस कर – २ कभी ना खुद को जाना
ग़फलत की सब नींद में उलझे – २ मिले ना सच्चा धाम – हे सतगुरू –

3 आस्तिक नास्तिक धूप छाँव में – २ सभी भये भरमाये – २
सगुण निगुण अंधकार में खोकर – २ जागा ना कहलाये
बिन पूर्ण सतगुरू के ना मिलता – २ सहज भक्ति का ज्ञान – हे सतगुरू –

4 निष्फल भक्ति कोई ना जाये – २ पर ना मुक्ति ना पाये – २
निराकार उसे रोक ना पायें – २ आशा तृष्णा जिस जाये
बिन मांगे अब आत्म पाये – २ पावन सतगुरू द्वार – हे सतगुरू –

5 सतगुरू देवें सार सब्द को – २ आत्म बने हंसा महान – २
सतगुरू कृपा कोई कोई पावे – २ सार सुरति का दान
हंसा बन निजघर को जावे – २ सतगुरू शरणी निजधाम – हे सतगुरू –

हे सतगुरू तोहे प्रणाम – २ तेरे चरणों में है निजधाम – २ हे सतगुरू –

–0–

भजन 27

तीन लोक की माया है – हर जन भरमाया – २
निरंकार ने सब जग को – आत्म रूप दिलाया है – २

1 त्रिलोक की बस्ती में – बड़े धोखे खाये हैं – २
निरंकार के इस जग में – सब जन भरमाये हैं – २
आशा तृष्णा ने मिल कर – सारे जग को घेरा है
माया मोहिणी ने खेल रचा – हर जीव लुभाया है – २ तीन लोक की –

2 आत्म मेरी ना ये समझे – ये घर पराया है – २
काया को ही निज समझे – तो ही भरमाया है – २
हंसा रूप में आये थे – हंसा रूप ही जाना है
सतनाम की दात जपो – सुरति में समाना हे – २ तीन लोक की –

3 सतगुरू ग़ुलाम मिले – वे नाम वे हूं जी मिले – २
जीवन ही बदल गया – सतगुरू सुरति में ही खिले – २
सतगुरू मुझको ही भजें – और मैं पाऊँ विश्राम
सतलोक का भेद पा कर – मैं पाऊँ चौथे राम – २ तीन लोक की –

4 'गधा भाई' वे खुद को कहें – जो निजधाम के मालिक हैं – २
'गुलाम' रूप जो अपनाया – सब के दास कहाये हैं – २
ऐसे सतगुरू पाये हैं – तीन लोक भुलाये हैं – २
सुरति रूप को जाना है – सहज मार्ग पहचाना है – २ तीन लोक की –

तीन लोक की माया है – हर जन भरमाया – २
निरंकार ने सब जग को – आत्म रूप दिलाया है –

–0–

भजन 28

कदम कदम पर रक्षा करते – हैं साहिब सतनाम – २
आवागमण से हमें छुड़ा – ले जाते हैं निजधाम – २
तुम्हारा हो कल्याण – साहिब हैं अति महान
साहिब जी की महिमां महान – २

१ मैं जानू पूर्ण सतगुरू जिन – भेद दिया निजधाम – २
भक्त जनों को सुरति से – २ पहुंचाते हैं निजधाम – तुम्हारा हो –

२ तीन लोक की नगरी में – समझे ना ये कोई काम – २
हर कोई इस में उलझ गया है – ना छोड़े अभिमान – तुम्हारा हो –

३ कोई ना पावे भेद साहिब का – फंसी बुरी तरहं ईन्सान – २
कंई युगों से ग्रस्त पड़ा है – लदा मान से ये नादान – तुम्हारा हो –

4 आवागमण से हमें छुड़ाते – हैं साहिब सतनाम – २
जे तूं बंदेया बचना चाहे – सत भक्ति ले तूं जान – तुम्हारा हो –

5 बड़े पाग से संत की सुरति – पाता ये ईन्सान – २
सार सब्द की दात ही पाकर – होता है कल्याण – तुम्हारा हो –

कदम कदम पर रक्षा करते – हैं साहिब सतनाम – २
आवागमण से हमें छुड़ा – ले जाते हैं निजधाम – २
तुम्हारा हो कल्याण – साहिब हैं अति महान
साहिब जी की महिमां महान – २

–0–

भजन 29

साहिब जी की माला सुरति से मैं पहनूं – सुरति में रम जाऊँ – २
माला की शक्ति सुरति में बसाऊँ – सतगुरू चरण रज पाऊँ – २

1 सुरति माला पहन कर – गली गली मैं निकलूं – २
सतगुरू की महिमां का – वर्णन करूं फिरूं – २
सतगुरू जी का हो जाऊँ – २ साहिब जी की –

2 सतनाम की माला – साहिब तेरी ये माला – २
अजब तेरी माला ने – द्वन्द से निकाला – २
अब नाचूँ हर पल गाऊँ – २ साहिब जी की –

3 सुरति माला ने तेरी है – सब को छुड़ाया – २
काल के जाल से है – इस ने बचाया – २
ऐसा कवच पाऊँ – २ साहिब जी की –

4 साहिब जी तेरी माला ने – हम को मिलाया – २
भटके हुऐ जीवों को – रस्ता दिखाया – २
सबको कृपा तेरी दिलाऊँ – २ साहिब जी की –

5 सुरत माला ये तेरी – सबको है भाती – २
सभी आपदाओं से – हम को बचाती – २
क्या मैं इस के गुण गाऊँ – २ साहिब जी की –

6 सुरति माला को मैं – अंतर ध्यायूँ – २
श्वांसों की माला से – जा इसको मिलाऊँ – २
खुद को ही पा जाऊँ – २ साहिब जी की –

7 आलोकिक ये माला – साहिब तेरी ये माला – २
सतगुरू सतगुरू – बोले ये माला – २
सतगुरू ही पा जाऊँ – २ साहिब जी की –

साहिब जी की माला सुरति से मैं पहनूं – सुरति में रम जाऊँ – २
माला की शक्ति सुरति में बसाऊँ – सतगुरू चरण रज पाऊँ – २

–0–

(ख) भजन 30

हर श्वांस श्वास पर नाम जपो, मेरे सतगुरू का मेरे साहिब का
तुम नित श्रद्धा से पीते रहो, अमृत प्याला मेरे साहिब का

1 यह जीवन है अनमोल तेरा, तूं रहना सतगुरू चरणों में
कहीं मुफत में ना लुटा देना, अनमोल खजाना श्वासों का
तूं साधक बन जा साहिब का, फिर डर कैसा महाकाल का .... हर श्वांस–

2 मद लौभ मोह के फंदे से, बच पाना बड़ा ही मुश्किल है
इस दुनियां में इन श्वांसों का, अभिमान बड़ा ही दुश्मन है
तुम सार सब्द सतगुरू से लो, यह सब्द बड़ा अनमोल है .... हर श्वांस ––

3 मन भरमाए माया ठगनी, है जाल बड़ा सुन्दर इसका
रहना तुम दूर इससे सदा, है काम क्रौध प्याला विष का
तुम सुबह शाम जपते रहना, ये सार सब्द मेरे सतगुरू का .... हर श्वांस ––

4 संसार में रहने वालो सुनो, मेरे सतगुरू की है अपार कृपा
सत्संग करते कचरा जलाते, वे नाम जी है नाम जिनका
सच्चा साथी है सतगुरू मेरा, जो मोड़े रूख तुफान का .... हर श्वांस ––

हर श्वांस श्वास पर नाम जपो, मेरे सतगुरू का मेरे साहिब का
तुम नित श्रद्धा से पीते रहो, अमृत प्याला मेरे साहिब का

–0–

भजन 31

श्वांस श्वांस में साथ है, हमारा तुम्हारा – 2
अगर ना मिलते सतगुरू तो, क्या होता हमारा

1 यह जो जीवन है मेरा, अर्पण साहिब तुझे
इसको रोशन कर दे, तेरा प्यार मुझे
तेरा साथ ना मिलता, तो क्या होता हमारा .... श्वांस श्वांस में ––

2 मोह ममता को त्याग कर, निजधाम को है जाना
हंसा बन कर ही तो, साहिब का दर्शन पाना
भक्ति मुक्ति भंडार हैं वो, सतगुरू पूर्ण खज़ाना .... श्वांस श्वांस में ––

3 साहिब संग में आ जाओ, जागेगा भाग हमारा
सत्संग आकर सतगुरू का, पा लो दर्शन प्यारा
सुरति में तुम पा जाओ, सतगुरू दर्श प्यारा .... श्वांस श्वांस में ––

4 सार सब्द सतगुरू से मिले, इसमें है साहिब प्यारा
इस सब्द को लेने से, मिलता है मौक्ष द्वारा
श्वांस श्वांस में सिमरन कर लो, सतगुरू पूर्ण हमारा .... श्वांस श्वांस में –

श्वांस श्वांस में साथ है हमारा तुम्हारा – 2
अगर ना मिलते सतगुरू तो क्या होता हमारा

–0–

भजन 32

पायो जी मैनें सतगुरू दर्शन पायो – 2

1 जन्म जन्म सूं मुक्ति पाई – 2
संत जी का दर्शन पायो –– पायो जी मैनें ––
2 कण कण में है सतगुरू वासा – 2
ऐसा सतगुरू पायो –– पायो जी मैनें ––
3 सच्वा घर सतलौक हमारा – 2
सतगुरू संग में जायो –– पायो जी मैनें ––
4 साहिब मिलन का एक बहाना – 2
सुरति में ध्यान लगायो –– पायो जी मैनें ––
5 सतगुरू मेरा साहिबन प्यारा – 2
सुरत सब्द में समायो –– पायो जी मैनें ––
6 सतगुरू मेरा साहिब सरूपा
सार सब्द में समायो –– पायो जी मैनें ––
7 सतनाम सतनाम जपते रहना – 2
साहिब हैं इसमें समायो –– पायो जी मैनें ––

8 साहिब की अमृत वाणी सुनने – 2
पूरा ब्रह्मण्ड भर आयो –– पायो जी मैनें ––
9 साहिब के संग में ध्यान करन सूं
मान सरोवर नहायो –– पायो जी मैनें ––
10 सुरत सब्द में सतगुरू मेरे – 2
परमहंस कहलायो –– पायो जी मैनें ––
11 अमर धाम हंसों का बसेरा – 2
सतगुरू उन में समायो –– पायो जी मैनें ––
12 परमहंस साहिब रूप में आयो – 2
सुरति में ही समायो –– पायो जी मैनें ––
13 हमरे सतगुरू परम जोत हैं – 2
सतपुरूष उन में समायो –– पायो जी मैनें ––

पायो जी मैनें सतगुरू दर्शन पायो – 2

–0–

भजन 33

छोड़ दे बंदे झूठे धंधे साहिब सत्संग आया कर
श्वांस श्वांस में सिमरन करके साहिब दर्शन पाया कर
साहिब को रिझाया कर – 2

1 क्यों करता है तेरी मेरी, यह जग जोगी वाली फेरी
साहिब तेरे संग में रहते, साहिब दर्शन पाया कर
हर पल दर्शन पाया कर – 2 .... छोड़ दे बंदे ––

2 मेरा नहीं वो सब का है दाता, सब का रखता ख्याल है
सत्संग करते सबको बुलाते, सब का कचरा जलाते हैं
सच्ची राह दिखाते हैं – 2 .... छोड़ दे बंदे ––

3 श्वांस की डौरी माला बना कर, सार सब्द में जाया कर
सुरत सब्द में ध्यान लगा कर, प्रीत से उस का बड़ाया कर
सुरति से दर्शन पाया कर – 2 .... छोड़ दे बंदे ––

4 सतगुरू अमृत वर्षा करते, आत्म संग नहाओ तुम
साहिब की तुम शरणी जाके, अमर लौक हो आओ तुम
हंस रूप बन जाओ तुम – 2 .... छोड़ दे बंदे ––

छोड़ दे बंदे झूठे धंधे साहिब सत्संग आया कर
श्वांस श्वांस में सिमरन करके साहिब दर्शन पाया कर

–0–

भजन 34

सुबह और शाम जेड़े साहिब आरती गान गे – 2
बिन मंगे सब कुछ साहिब कौलूं पान गे – 2

1 साहिब का आश्रम दुनियां से न्यारा है – 2
सत्संग होता वहां अजब नज़ारा है
सुबह और शाम जेड़े शीष नवान गे – 2
साहिब कौलूं बिन मंगे सब कुछ पानगे .... सुबह और शाम ––

2 सत्संग आन वाले कदे वी ना रूकदे – 2
बूटे लगे प्रेम वाले कदे वी ना सुकदे
साहिब कौल आनगे दे सार सब्द पानगे – 2
सुरत सब्द विच मेरे सतगुरू नूं पानगे .... सुबह और शाम ––

3 निराकार प्रभु दी है बड़ी ही महानता – 2
सारा जगत इस भ्रम को है पालता
ईक वारी सच्चे साहिब कौल जेड़े आनगे – 2
प्रीत करन दी सुरति साहिब कौलूं पानगे .... सुबह और शाम ––

4 दुनियां नूं छड दे तूं झूठी ये माया है – 2
निराकार ने इक खेल रचाया है
सतगुरू कौल आनके हंस बन जानगे – 2
परमहंस वाली जौत नूं पानगे .... सुबह और शाम ––

5 दुनियां नूं वेख तेरा मन क्यूं है डोलदा – 2
सुबह शाम साहिब साहिब क्युं नी बोलदा
मीरा बाई वांग तैनू निजधाम लेके जानगे – 2
बिन मंगे सब कुछ साहिब कौलूं पानगे .... सुबह और शाम ––

6 परमहंस नाल जेड़े सतलौक जानगे – 2
सभी संतों के वहां दर्शन पानगे
भव सागर तर पूर्ण मौक्ष नूं पानगे – 2
जन्म मरन दा लेखा मिटान गे ....

सुबह और शाम जेड़े साहिब आरती गान गे – 2
बिन मंगे सब कुछ साहिब कौलूं पान गे – 2

–0–

भजन 35

सारे तीर्थ धाम तुम्हारे चरणों में
हे सतगुरू प्रणाम तुम्हारे चरणों में
मैनें पाया निजधाम तुम्हारे चरणों में
हे सतगुरू प्रणाम तुम्हारे चरणों में

1 तुम संत बन कर सतलौक से आए हो
ईक सुरति आभा अपने संग में लाए हो
संत वे नाम जी कहलाए हो
करने हम सब का कल्याण, जग में आए हो .... सारे तीर्थ ––

2 तेरी वाणी में अमृत है भरा
जो सुनता उसका हो भला
संसार जगाने के लिए
सार सब्द जहाज संग लाए हो .... सारे तीर्थ ––

3 तेरे प्रवचनों में जीवन दान है
तेरे हाथों में वरदान है
एक नज़र से देखे हो कल्याण है
काल जाल से मुक्त कराने आए हो .... सारे तीर्थ ––

4 तूं है मेरा सब्द पिता
सार सब्द में तूं है बसा
करता तूं है सब का भला
हम सबको चरणों में दे दो जगह .... सारे तीर्थ ––

5 तूं अमरलौक का वासी है
हंसों का संगी साथी है
तेरा संग है अनमोल बड़ा
हम्हें आत्म–हंस बना दो पिता ..... सारे तीर्थ ––

6 तूं मेरा सतगुरू प्यारा है
मोहे चरण शरण में दे दो जगह
तेरी रहमतों का द्वार मिला
जो सब तीर्थ से है बड़ा .... सारे तीर्थ ––

सारे तीर्थ धाम तुम्हारे चरणों में
हे सतगुरू प्रणाम तुम्हारे चरणों में
मैनें पाया निजधाम तुम्हारे चरणों में
हे सतगुरू प्रणाम तुम्हारे चरणों में

–0–

भजन 36

श्वांसों की माला में, सिमरूं मैं, साहिब नाम – 2
साहिब जपते जपते निकलें मेरे तन से प्राण

1 साहिब के रंग में ऐसी डूबी, हो गई एक ही रूप – 2
साहिब के चरणों में आकर, मिलता आराम .... श्वांसों की ––

2 साहिब सहारे मैने छोड़ी, अपने जीवन की डौर – 2
साहिब के चरणों में रख दी, मैने ये नाव .... श्वांसों की ––

3 साहिब शरण में जो कोई आवे, होता उसका उद्धार – 2
करता है सब, मेरा साहिब बन, सागर पतवार .... श्वांसों की ––

4 धीरज धरो, सिमरन करो, सिमर सिमर साहिब ध्यान धरो – 2
सुरति में जाओ शीष निवाओ, बारम्बार .... श्वांसों की ––

5 जग ने ठुकराया, साहिब शरण आया – 2
साहिब के चरणों में, है मेरा निजधाम .... श्वांसों की ––

श्वांसों की माला में सिमरूं में साहिब नाम – 2
साहिब जपते जपते निकलें मेरे तन से प्राण

–0–

भजन 37

............मैं कागज दी बेड़ी साहिबा, तूं मैनूं पार लगाया
.............शुक्र करां मैं तेरा हरदम, जो मंगया सो पाया

शुक्र साहिबा तेरा शुक्र साहिबा
ज़िन्दगी रही है गुज़र साहिबा – 2

1 आम रवां या खास हौवां मै, कदे ना चांवा मैं
फुल सदके दा पै जावे, ऐ करां दुआवां मैं
बस इतनी बख्श दे सुरति साहिबा .... शुक्र साहिबा––
2 कई पैरां तों नंगे फिरदे, सिर ते लब्बन छावां
मैनूं साहिबा सब कुछ दिता, क्युं ना शुक्र मनावां
सौखा किता स्वांसां दा, सफ़र साहिबा .... शुक्र साहिबा––
3 ऐ शोहरत दी पौड़ी ईक दिन, डिग ही पैनी ऐ
ऐ पैसे दी दौड़ तां साहिबा, चलदी रैनी ऐ
मेरे पल्ले पा दे तूं, सब्र साहिबा .... शुक्र साहिबा––
4 सतगुरू मेरे मेहर कीती, मैनूं तूं अपनाया
शुक्र करां मैं किदां तेरा, पुल्ले नूं गल लगाया
साहिबा पुल्ले नूं गल लगाया .... शुक्र साहिबा––

शुक्र साहिबा तेरा शुक्र साहिबा
ज़िन्दगी रही है गुज़र साहिबा – 2

–0–

भजन 38

चाहे संत कहो या साहिब कहो, चाहे राम (निरालंभ) कहो सतपुरूष कहो
मेरा सतगुरू सभी में समाया, सब में है उसकी छाया

1 सतगुरू है ईक प्रेम की ज्योति, जान सको तो जानो – 2
मेरा साहिब है उस में समाया, सब पे है उसकी छाया .... चाहे संत कहो––

2 संत बन कर इस दुनियां में, सब्द भी संग लाया – 2
सतपुरूष की है वो छाया, जिस में साहिब समाया .... चाहे संत कहो––

3 सतनाम सतनाम सिमरने वाला, परमहंस कहलाया – 2
सुरति लेकर अपने संग में, सतपुरूष संग समाया .... चाहे संत कहो––

4 अमरलौक का है वो वासी, सतपुरूष रूप धर आया – 2
सोए हुए जीवों को जगाने, सुरति निरति संग लाया .... चाहे संत कहो––

5 सार सब्द की दात बांट कर, काल चक्र से छुड़ाया – 2
आत्म को हंस बना कर, मौक्ष पद दिलवाया .... चाहे संत कहो––
पूर्ण संत कहाया साहिब जी पूर्ण संत कहाया

चाहे संत कहो या साहिब कहो, चाहे राम (निरालंभ) कहो सतपुरूष कहो
मेरा सतगुरू सभी में समाया, सब में है उसकी छाया

–0–